आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

मुद्रण तारीख :- 25.09.2015 | अंक-292 | तारीख-26 सितम्बर, 2015, भाद्रपद शुक्ल पक्ष-13 | शनिवार | उदयपुर | कुल पृष्ठ-2 | मूल्य -1 रूपया

– पद्म श्री कैलाश 'मानव'

मर जाऊं मांगू नहीं, अपने तन के काज।
पर हित कारण मांगता, मोहि न आवे लाज।।

तुलसीदास जी की श्री रघुनाथ भक्ति

बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास।
राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास।। (19)

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं श्रीरघुनाथ जी की भक्ति वर्षा ऋतु के समान है, उत्तम कोटि के सेवक धान के समान हैं और ''राम'' नाम के दो सुंदर अक्षर सावन–भादों के महीने के समान हैं। (19)

एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोउ ।। (20)

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं –''राम'' नाम के दोनों अक्षरों में से एक श्रीरघुनाथ जी के छत्र के रूप में और दूसरा मुकुट की मणि के रूप में शोभायमान होता है। (20)

श्राद्ध के प्रकार

नित्य – यह श्राद्ध के दिनों में मृतक के निधन की तिथि पर किया जाता है।

नैमित्तिक– किसी विशेष पारिवारिक उत्सव, जैसे–पुत्र जन्म पर मृतक को याद कर किया जाता है।

काम्य–यह श्राद्ध किसी विशेष मनौती के लिए कृत्तिका या रोहिणी नक्षत्र में किया जाता है।

श्राद्ध के अधिकारी

पिता का श्राद्ध पुत्र को ही करना चाहिए। पुत्र के न होने पर पत्नी श्राद्ध कर सकती है। पत्नी न होने पर सगा भाई और उसके भी अभाव में संपिंडों को श्राद्ध करना चाहिए। एक से अधिक पुत्र होने पर सबसे बड़ा पुत्र श्राद्ध करता है। पुत्री का पति वं पुत्री का पुत्र भी श्राद्ध के अधिकारी हैं। पुत्र के न होने पर पौत्र या प्रपौत्र भी श्राद्ध कर सकते हैं। पुत्र, पौत्र या प्रपौत्र के न होने पर विधवा स्त्री श्राद्ध कर सकती है। पत्नी का श्राद्ध व्यक्ति तभी कर सकता है, जब कोई पुत्र न हो। पुत्र, पौत्र या पुत्री का पुत्र न होने पर भतीजा भी श्राद्ध कर सकता है। गोद लिया पुत्र भी श्राद्ध का अधिकारी है।

श्राद्ध में महत्वपूर्ण बातें

अपरान्ह का समय, कुशा, श्राद्धस्थली की स्वच्छता, उदारता से भोजन आदि की व्यवस्था और ब्राह्मा की उपस्थिति।

तीन बातें प्रशंसनीय हैं–

सफाई, क्रोधहीनता और चैन (हड़बड़ी व जल्दबाजी) का न होना।

श्राद्ध के लिए उचित बातें –

श्राद्ध के लिए उचित द्रव्य हैं – तिल, चावल, जौं, जल, मूल (जड़युक्त सब्जी) और फल।

श्राद्ध के लिए अनुचित बातें –

कुछ अन्न और खाद्य पदार्थ जो श्राद्ध में प्रयुक्त नहीं होते–मसूर, राजमा, कोदों, चना, कपित्थ, अलसी, तीसी, सन, बासी भोजन और समुद्रजल से बना नमक। भैंस, हिरणी, ऊँटनी, भेड़ और क खुरवाले पशु का दूध भी वर्जित है, पर भैंस का घी वर्जित नहीं है। श्राद्ध में दूध, दही और घी पितरों के लि विशेष तुष्टिकारक माने जाते हैं। श्राद्ध किसी दूसरे के घर में, दूसरे की भूमि में कभी नहीं किया जाता है। जिस भूमि पर किसी का स्वामित्व न हो, सार्वजनिक हो,`सी भूमि पर श्राद्ध किया जा सकता है।

आंध्र प्रदेश में होगा गोदावरी और कृष्णा नदियों का संगम

देश में नदियों को जोड़ने और जल संसाधन के बेहतर इस्तेमाल की दिशा में नया इतिहास दर्ज हो गया है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू ने बताया कि गोदावरी नदी का पानी कृष्णा नदी में छोडेंगे इसके साथ ही दोनों नदियों को औपचारिक रूप से जोडने का काम पूरा होगा। यह कार्यक्रम इब्राहिमपटनम गांव में होगा।

1950 के दशक से चर्चा

गोदावरी से कृष्णा में करीब 80 टीएमसी पानी भेजा जाएगा। इब्राहिमपटनम के पास दोनों नदियों के संगम के स्थान को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जाएगा। दोनों नदियों को जोडने की लंबे समय से योजना थी। प्रसिद्ध इंजीनियर के.एल. राव के 1950 के दशक में केंद्रीय सिंचाई मंत्री रहने के समय से इस पर चर्चा होती रही है।

अटल सरकार में बनी थी योजना

अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राजग सरकार के दौरान इस योजना को पुनर्जीवित किया गया था। लेकिन अब पहली बार इसे लागू किया गया। गोदावरी को कृष्णा से जोडने का काम पश्चिम गोदावरी जिले के पट्टीसम गांव में गोदावरी नदी की पट्टीसीमा सिंचाई परियोजना द्वारा संभव हो पाया।

नायडू सरकार ने अमल किया

आंध्र प्रदेश के जल संसाधन मंत्री डी. उमामहेश्वर राव ने हाल ही में विधानसभा के मानसून सत्र के दौरान कहा था पट्टीसम लिफ्ट योजना के तहत अखंड गोदावरी राइट बैंक से पट्टीसम गांव के पास स्थित पोलवरम बांध स्थल की गिरने वाली धारा की तरफ पानी लिफ्ट करने यानी उठाने और पोलवरम राइट मुख्य नहर में गिराने (1.50 केएम) का प्रस्ताव है।

हम भीतर जितने खाली रहेंगे जीवन में उतने ही शांत रहेंगे

सांसारिक जीवन में भराव की जितनी जरूरत है, आध्यात्मिक जीवन में खालीपन का उतना ही महत्व है। हम संसार में खाली रह ही नहीं सकते। दुनिया ऐसे ही चलती है। कोई किसी से छीनकर भर रहा है और जिसका छिन जाता है, वो दोबारा भरने की तैयारी करता है। अध्यात्म में इसका उल्टा है। अध्यात्म कहता हैं थोड़ा खालीपन, थोड़ा कोरा होना भी जरूरी है। इसीलिए भीतर के शून्य की बात कही जाती है। हम भीतर जितना खाली रहेंगे, उतने शांत रहेंगे और भीतर जितने भरे हुए रहेंगे, अशांत रहेंगे। जब संसार में उतरें तो खालीपन न रखें, भराव से झगड़ा न रखें। संसार, संसार की तरह ही चलेगा। उसमें ज्यादा उलझन पैदा न करें, लेकिन जैसे ही अपने भीतर उतरें, फौरन खालीपन के महत्व को समझें। लोग हमसे पूछे हैं – आखिर यह खालीपन होता क्या है और मिलेगा कैसे ? जिनके जीवन में गुरु आए हैं, वे

खालीपन को समझ सकेंगे, क्योंकि गुरु का काम ही है भीतर जाकर सफाई कर देना और इसके लिए वह ध्यान सिखाता है। ध्यान सफाई की उस क्रिया का नाम है, जो भीतर खालीपन पैदा करता है। शास्त्रों में लिखा है – 'आचार्यो मृत्युः' यानी आचार्य मृत्यु है। सीधी–सी बात है गुरु के पास गए और हमारी उस बात की मृत्यु हो जाएगी, जिस बात को संसार ने जीवन माना है। हम बाहर जहां–जहां जीवन ढूंढ़ते हैं, दरअसल वहां होता नहीं है, इसलिए लोग अपना जीवन जीने के लिए दूसरे का जीवन छीनने लगते हैं। भीतर उतरते ही आप अपने जीवन से परिचित हो जाते हैं और जो अपनी जिंदगी को जान गया, वो दूसरे की जिंदगी का भी मान करेगा।

पितृ ऋण मुक्ति का मार्ग हैं - श्राद्ध पक्ष

रेखा कल्पदेव कुर्वीत समये
श्राद्धं कुले कश्चिन्न सीदति।
आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गं कीर्तिं
पुष्टिं बलं श्रियम।।
पशून् सौख्यं धनं धान्यं
प्राप्नुयात् पितृपूजनात।
देवकार्यादपि सदा
पितृकार्यं विशिष्यते।।
देवताभ्यः पितृां हि
पूर्वमाप्यायनं शुभम।।
–गरुड़ पुराण

''समयानुसार श्राद्ध करने से कुल में कोई दुखी नहीं रहता। पितरों की पूजा करके मनुष्य आयु, पुत्र, यश, स्वर्ग, कीर्ति, पुष्टि, बल, श्री, पशु, सुख और धन–धान्य प्राप्त करता है। देवकार्य से भी पितृकार्य का विशेष महत्व है। देवताओं से पहले पितरों को प्रसन्न करना अधिक कल्याकारी है।'

श्राद्ध शब्द श्रद्धा से बना है जो श्राद्ध का प्रथम अनिवार्य तत्व है अर्थात पितरों के प्रति श्रद्धा तो होनी ही चाहिए। आश्विन कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तिथि से अमावस्या तक का समय श्राद्ध या महालय पक्ष कहलाता है। इस अवधि के सोलह दिन पितरों अर्थात श्राद्ध कर्म के लिए विशेष रूप से निर्धारित किये गए हैं। यही अवधि पितृ पक्ष के नाम से जानी जाती है। पितृ पक्ष में किये गए कार्यों से पूर्वजों की आत्मा को शांति प्राप्त होती है तथा कर्ता को पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है। आत्मा की अमरता का सिद्धांत तो स्वयं भगवान श्री कृष्ण गीता में उपदेशित करते हैं। आत्मा जब तक अपने परम आत्मा से संयोग नहीं कर लेती, तब तक विभिन्न योनियों में भटकती रहती है। और इस दौरान उसे श्राद्ध कर्म में संतुष्टि मिलती है। शास्त्रों में देवताओं से पहले पितरो को प्रसन्न करना अधिक कल्याकारी कहा गया है। यही कारण है कि देवपूजन से पूर्व पितर पूजन किये जाने

कौनसा श्राद्ध कब करें

जिन व्यक्तियों की सामान्य मृत्यु चतुर्दशी तिथि को हुई हो, उनका श्राद्ध केवल पितृपक्ष की त्रयोदशी अथवा अमावस्या को किया जाता है। जिन व्यक्तियों की अकाल–मृत्यु (दुर्घटना, सर्पदंश, हत्या, आत्महत्या आदि) हुई हो, उनका श्राद्ध केवल चतुर्दशी तिथि को ही किया जाता है। सुहागिन स्त्रियों का श्राद्ध केवल नवमी को ही किया जाता है। नवमी तिथि माता के श्राद्ध के लिए भी उत्तम है। संन्यासी पितृगणों का श्राद्ध केवल द्वादशी को किया जाता है। पूर्णिमा को मृत्यु प्राप्त व्यक्ति का श्राद्ध केवल भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा अथवा आश्विन कृष्ण अमावस्या को किया जाता है। नाना–नानी का श्राद्ध केवल आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को किया जाता है।

श्राद्ध विधि

सुबह उठकर स्नान कर देव स्थान व पितृ स्थान को गाय के गोबर से लिपकर व गंगाजल से पवित्र करें। घर आंगन में रंगोली बनाए। महिलां शुद्ध होकर पितरों के लिए भोजन बनाए। श्राद्ध का अधिकारी श्रेष्ठ ब्राह्मण (या कुल के अधिकारी जैसे दामाद, भतीजा आदि) को न्यौता देकर बुलाए। पितरों की पूजा एवं तर्पण आदि करें। पितरों के निमित्त अग्नि में गाय का दूध, दही, घी वं खीर अर्पित करें। गाय, कुत्ता, कौआ व अतिथि के लिए भोजन से चार ग्रास निकालें। ब्राह्मण को आदरपूर्वक भोजन कराए, मुखशुद्धि, वस्त्र, दक्षिणा आदि से सम्मान करें। ब्राह्मण स्वस्तिवाचन तथा वैदिक पाठ करें और गृहस्थ वं पितर के प्रति शुभकामनां व्यक्त करें। पितृ पक्ष में अपने पितरों के निमित्त जो अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुरूप शास्त्र विधि से श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करता है, उसके सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं, और घर, परिवार व्यवसाय तथा आजीविका में हमेशा उन्नति होती है।

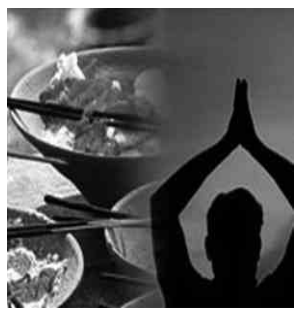

मानव मन के बोल

(आत्मकथा)

❁ प्रभु का प्रसाद है नारायण सेवा ❁

ऊँ भूर्वभूः स्वः तत्सवितुरेण्यम्
भर्गो देवस्य धिमहि धीयो यो नः
प्रचोदयात्।।

द्विपदा गायत्री मंत्र है ठाकुर जी आप सर्वग्य हो अर्न्तयामी हो। सब में बसे हुए हो। गरीब में भी आप हो इन अमीर में भी आप, इस वृद्ध में भी आप हो इस बालक में भी आप हो इस बीमार में भी आप हो इस स्वस्थ्य में भी आप हो। देवताओं में भी आप मनुष्य में भी आप, सर्वग जगह आप हो। ऐसे परमात्मा हो, लेकिन मेरा ज्ञान इतना बडे की मै, अनुभूति कर पांऊ।

अग्नि है पर अग्नि की अनुभूति नहीं कर पा रहा हूं। हवा चल रही है लेकिन में अज्ञानी हूँ, मुझे क्या पता हवा क्या होती है। हे ठाकुर आपकी अनुभूति करता हूं और आप अनुभूति की कृपा करे। ये है गायत्री मंत्र। प्रार्थना भगवान ने कराई हमने क्या किया, ईश्वर ने कराया सब। अरे तु क्या कर सकता है तेरा ठाकुर कर सकता है।

कमला जी ने एक बार कहा था। मानव साहब आप उदास क्यों हो रहे हो। मैने कहा कमला जी क्या बताऊं अगले शिविर के लिए आटे के लिए पैसा नहीं है। बोला आटे के लिए पैसा नहीं है न आटा ही चाहिए न आप भगवान पे छोड़ दो भगवान को कहो आटे की व्यवस्था करे यदि आप अपने पे चिंता करोगे तनाव लाओगे तो भगवान सोच रहे होंगे कि ठीक है कैलाश मानव चिंता कर रहा है मैं क्यो करू और आप आटे की चिंता भगवान पे छोड देंगे तो आटे का इन्तजाम भगवान कर देगा। आप चिंता छोड़ दीजिए आटा मैं ला दुंगी फीर मैंने सोचा कमला तु भी कहां से लायेगी तेरा ठाकुर लायेगा और दुसरे दिन आटा आ गया। कोई दानदाता आटे की बोरिया ले आया। जब–जब हमने अपने आप पे घमण्ड किया हारे है। मेरे पास तो कई उदाहरण है इसके और बात चल रही थी पई शिविर की फिर में णवकार मंत्र बोला प्रार्थना की।

क्रमशः अगले अंक में ...

सम्पादकीय

चाहे व्यक्ति हो या विश्व, कोई ऐसा नहीं है, जो शांति नहीं चाहता, लेकिन मुझे लगता है कि कोई ऐसा नहीं है, जो सचमुच में शांति चाहता है। शांति की इच्छा तो हर कोई रखता है, लेकिन इसे चाहता कोई नहीं है। हर कोई इससे बुरी तरह से घबराता है। इसे ग्रहण करके इसके साथ रहने का साहस किसी में नहीं है। इसके बावजूद हर कोई यही करता है। कि उसे शांति चाहिए।

हम दार्शनिकों के पास जाते हैं। साधु–महात्माओं के पास जाते हैं। शिक्षक और तांत्रिकों के पास जाते हैं और उनके पाँवों पर अपना मस्तक रखकर गिड़गिड़ाते हैं कि 'हम क्या करें कि शांति मिले?' 'हम क्या करें कि शांति मिले,' अपने आप में ही विरोध से भरा हुआ वाक्य है। शांति करने से नहीं मिलती। शांति के लिए तो जरूरी है कि आप जो कर रहे हैं, उसे करना बन्द कर दें। कुछ न करने की प्रक्रिया में शांति निहित है, करने की प्रक्रिया में नहीं। जब हम कुछ करने की सोचेंगे, तो उस करने के दौरान अशांतियाँ उत्पन्न होंगी। शांति के लिए तो जरूरी है कि करना बंद कर दिया जाए और हम हैं कि अपने गुरू से पूछ रहे हैं कि 'हम क्या करें कि शांति मिले।'

यदि न करना ही शांति प्राप्त करने का तरीका है, तो क्या हम सचमुच न करने की स्थिति को स्वीकार करने को तैयार हैं? बिल्कुल भी नहीं। यहाँ न करने से मेरा तात्पर्य अकर्मण्यता से नहीं है।

शांति के लिए एक बहुत प्यारा शब्द है–'अमन'। अमन का अर्थ ही है 'जहाँ' मन न हो। जहाँ मन नहीं होगा, वहाँ शांति होगी और जहाँ मन होगा, वहाँ शांति नहीं रह सकती। ये दानों एक जगह बैठ ही नहीं सकते। जन्मजात विरोध है इस दोनों का और हम हैं कि इन दोनों को एक–साथ पाना चाहते हैं। तो फिर भल यह संभव कैसे होगा?

यदि कोई व्यक्ति सचमुच में शांति पाना चाहता है, तो दुनिया की कोई भी ताकत उसे ऐसा करने से रोक नहीं सकती। यह कोई जमीन का टुकड़ा नहीं है, जिसका बिना मोल चुकाए आप पा नहीं सकते हैं।

सुविचार

जो मनुष्य हंसी उड़ाने वालों को शिक्षा देता है वह स्वयं अपमानित होता है। दुर्जनों को चेतावनी देने वाला अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारता है — **बाईबिल नीति वचन**

अपनी स्त्री, भोजन और धन इन्हीं तीनों में संतोष करना चाहिये। विद्या पढ़ना, जप करना/कराना और दान देना इन तीनों में संतोष नहीं करना चाहिये।

— **चाणक्य नीति**

संतुष्ट मन वाले के लिए सदा सभी दिशाएँ सुखमयी हैं, जैसे जूता पहनने वालों के लिए कंकर और कांटे आदि से दुःख नहीं होता। — **श्रीमदभागवत् गीता**

170 निःशक्तजन हुए सशक्त

उदयपुर, नासिक। नासिक की पावन धरा पर एक ओर कथा और दुसरी ओर निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन हो रहा है। देवभूमि हिमाचल से आए भागवत कथा मर्मज्ञ आचार्य प्रवर श्री प्रकाश चैतन्य जी महाराज ने कहा कि प्रभु अपने भक्त के नेत्रों के समान होते हैं, जो वो चाहते हैं, वही अपने भक्त को दर्शन कराते हैं और उनका हाथ थामकर उन्हें भवसागर से पार कराते हैं। साथ ही सायंकालीन सत्संग प्रवचन व भजन संध्या के दौरान श्रद्धेय श्री दयालु जी महाराज ने राधे–राधे जपो चले आए बिहारी भजन पांडाल में उपस्थित श्रद्धालु व साधु लोग नाच उठे।

शिविर प्रभारी श्री राकेश शर्मा ने बताया कि कुंभ की पावन धरा पर हो रहे सेवा कार्य से अभिभूत होकर निःशक्त बंधुओं के परिजन प्रसन्न मन से संस्थान का आभार व्यक्त कर रहे हैं। डॉ. ए.एस. चुंडावत व डॉ. विनोद मेहता के हाथों से जीवनदान पा रहे मासूम बालक निरंतर स्वास्थ्य लाभ पा रहे हैं और अब तक लगभग 170 बालक सशक्त हो चुके हैं।

संस्थान के अनेकानेक साधक निरंतर सेवा कार्य को समर्पित हैं, जिनमें हरिप्रसाद, वासुदेव, दिलीप, अरूण, विनोद, अनिल, प्रफुल, राजू, रमेश, मुकेश, राकेश आदि अपस्थित थे। संचालन श्री ओमपाल ने किया।

क्यों होता हैं पितृदोष

पितृ दोष के कारण परिवार में किसी की अकाल मृत्यु होने से, अपने माता–पिता आदि सम्माननीय जनों का अपमान करने से, मरने के बाद माता–पिता का उचित ढंग से क्रियाकर्म और श्राद्ध न करने से, उनके निर्मित वार्षिक श्राद्ध न करने से पितरों का दोष लगता है।

इसके फलस्वरूप परिवार में अशांति, वंश वृद्धि में रूकावट, आकस्मिक बीमारी, संकट, धन में बरकत न होना, सारी सुख सुविधाए होते हुए भी मन असंतुष्ट रहना आदि पितृ दोष का कारण हो सकता है। पितृ दोष कुंडली योग यदि किसी जातक की कुंडली में पितृदोष होता है तो उसे अनेक प्रकार की परेशानियां, हानियां उठानी पड़ती है। घर में कलह, अशांति रहती है। रोग–पीड़ां पीछा नहीं छोड़ती है। घर में आपसी मतभेद बने रहते हैं। कार्यों में अनेक प्रकार की बाधां उत्पन्न होती है। अकाल मृत्यु का भय बना रहता है। संकट, अनहोनियां, अमंगल की आशंका बनी रहती है। संतान की प्राप्ति में विलंब होता है। घर में धन का अभाव भी रहता है। अनेक प्रकार के महादुखों का सामना करना पड़ता है।

पितृदोष के लक्षण – घर में आय की अपेक्षा खर्च बहुत अधिक होता है। घर में लोगों के विचार नहीं मिल पाते जिसके कारण घर मे झगडे होते रहते हैं। अच्छी आय होने पर भी घर में बरकत नहीं होती जिसके कारण धन कत्रित नहीं हो पाता। संतान के विवाह में काफी परेशानियां और विलंब होता है। शुभ तथा मांगलिक कार्यों में काफी दिक्कते उठानी पड़ती है। अथक परिश्रम के बाद भी थोड़ा–बहुत फल मिलता है। बने–बना काम को बिगड़ते देर नहीं लगती।

भारत के बारे में रोचक तथ्य

- भारतीय रेल देश का सबसे बड़ा नियोक्ता है। यह दस लाख से अधिक लोगों को रोजगार प्रदान करता है।
- विश्व का सबसे प्रथम विश्वविद्यालय 700 बी सी में तक्षशिला में स्थापित किया गया था। इसमें 60 से अधिक विषयों में 10,500 से अधिक छात्र दुनियाभर से आकर अध्ययन करते थे। नालंदा विश्वविद्यालय चौथी शताब्दी में स्थापित किया गया था जो शिक्षा के क्षेत्र में प्रचीन भारत की महानतम उपलब्धियों में से एक है।
- आयुर्वेद मानव जाति के लिए ज्ञात सबसे आरंभिक चिकित्सा शाखा है। शाखा विज्ञान के जनक माने जाने वाले चरक में 2500 वर्ष पहले आयुर्वेद का समेकन किया था।
- भारत 17 वीं शताब्दी के आरंभ तक ब्रिटिश राज्य आने से पहले सबसे सम्पन्न देश था। क्रिस्टोफर कोलम्बस भारत की सम्पन्नता से आकर्षित हो कर भारत आने का समुद्री मार्ग खोजने चला और उसने गलती से अमेरिका को खोज लिया।
- नौवहन की कला और नौवहन का जन्म 6000 वर्ष पहले सिंध नदी में हुआ था। दुनिया का सबसे पहला नौवहन संस्कृत शब्द नव गति से उत्पन्न हुआ है। शब्द नौ सेना भी संस्कृत शब्द नोउ से हुआ।

शिशु भी जानते हैं सही-गलत के बारे में

लंदन। यूनिवर्सिटी ऑफ वॉशिंगटन के शोध में दावा किया गया है कि 15 महीने के शिशु को भी इस बात का अहसास होता है कि क्या सही है और क्या गलत। इसके अनुसार, छोटे बच्चों को भी खाने–पीने की चीजों के समान–असमान वितरण के बारे में समझ होती है। समान वितरण नहीं होने पर वे आश्चर्य या नाराजगी भी प्रकट करते हैं।

शोध के लिए शिशुओं को एक ऐसा वीडियो दिखाया गया है जिसमें दूध और पटाखे बांटे गए थे। प्रत्येक बच्चे को खेलने के लिए दो–दो खिलौने दिए गए। उनमें से एक तिहाई बच्चों ने अपना पसंदीदा खिलौना अन्य बच्चों को खेलने को दिया। जबकि दूसरे एक तिहाई बच्चों ने वह खिलौना दूसरे बच्चों को दिया जो उन्हें कम पसंद था। बाकी एक तिहाई बच्चों ने एक भी खिलौना दूसरे बच्चों को खेलने को नहीं दिया। प्रोफेसर ने कहा कि जो बच्चे चीजों के समान वितरण को लेकर तत्पर थे, उन्हीं बच्चों ने अपना खिलौना भी दूसरों को खेलने को दिया।

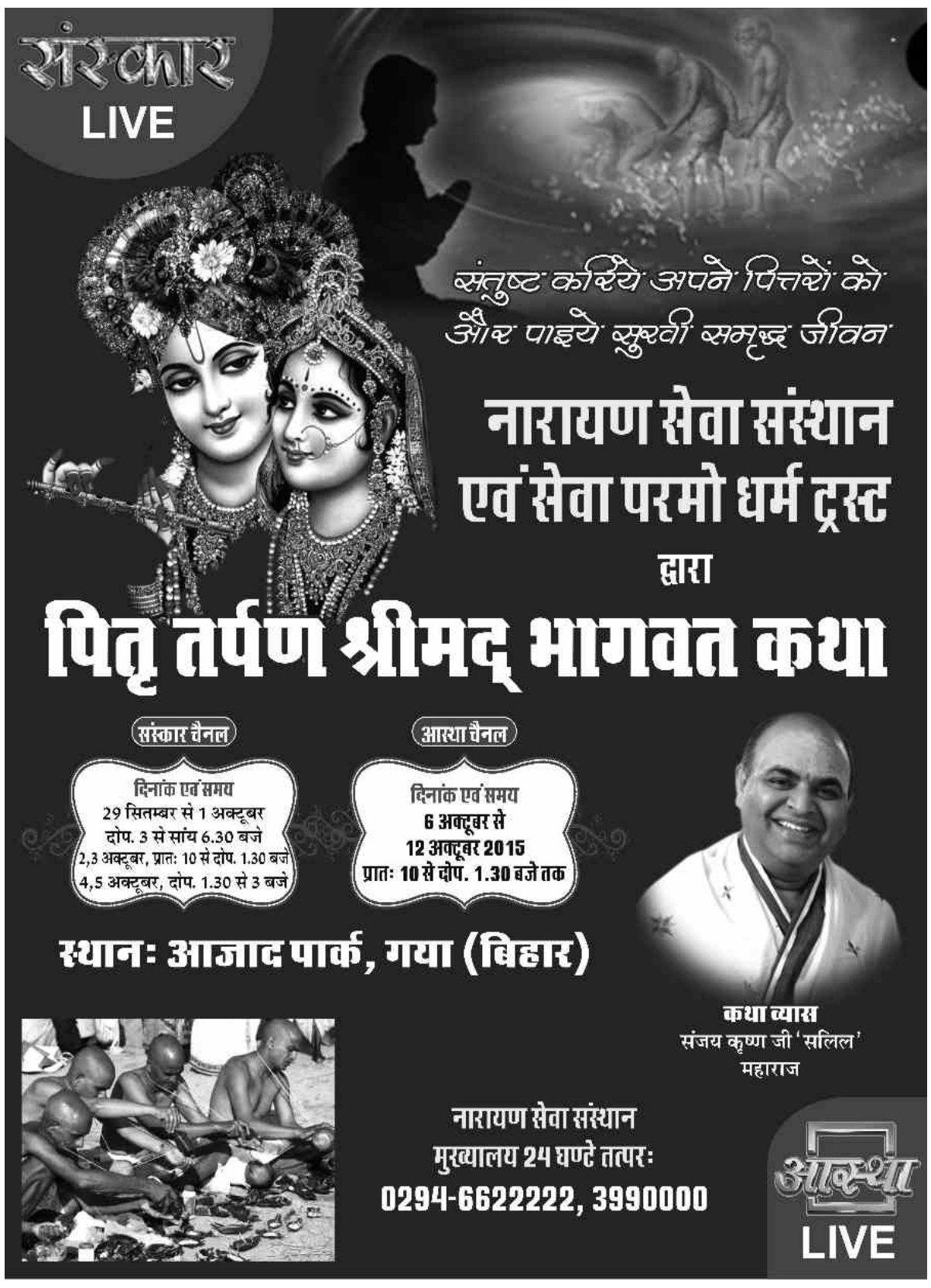

गुरु के जीवन में आने पर प्रेम जागेगा व श्रद्धा उत्पन्न होगी

जब भी हम किसी को गुरु बनाने जाएंगे, हमारा मन हमें टोकेगा, रोकेगा और हो सकता है बाधा पहुंचाए, क्योंकि गुरु बनाते ही हम किसी के प्रति समर्पित हो जाते हैं। उसके शब्द हमारे शब्द बन जाते हैं। गुरु की हां और ना में हमारी भी स्वीकृति, अस्वीकृति जुड़ जाती है। यदि हम मन का कहना नहीं मानते तो वह अड़चनें पैदा करता है। गुरु के जीवन में आते ही प्रेम और भक्ति का अभ्यास सरल होने लगता है। हम कर्मकांड से थोड़ा ऊपर उठकर भक्तियोग की ओर चलने लगते हैं। गुरु बनाना अपने आप में एक कर्मकांड है, लेकिन इसकी प्रतिछाया में योग बसा है। हम तीर बन जाते हैं और गुरु धनुष। बिना धनुष की तीर का कोई महत्व नहीं है, लेकिन जब गुरु रूपी खिंचे हुए धनुष पर शिष्य रूपी तीर चढ़ता है तो उसकी यात्रा फिर परमात्मा ही होती है। जैसे ही हम गुरु के प्रति समर्पित हुए, हमारी समग्र शक्ति गुरु की शक्ति से मिल जाती है और उनकी हमसे। यह सही है कि गुरु के जीवन में आने पर पहले प्रेम जागेगा और फिर श्रद्धा उत्पन्न होगी। प्रेम और श्रद्धा में फर्क है। प्रेम–प्रेमिका सिर्फ प्रेम करते हैं, उनके बीच श्रद्धा नहीं रहती, इसलिए एक दिन आप उनकों अलग–अलग भी पाएंगे। लेकिन जैसे ही प्रेम में श्रद्धा जुड़ी, तब हमारी प्राण ऊर्जा ऊपर उठेगी और सीधे आत्मा से मिल जाएगी। इसीलिए प्राणायाम करते समय श्रद्धा बहुत जरूरी है। जिस गुरु मंत्र के साथ प्राणायाम किया जाए, उसमें श्रद्धा हो तो ऊर्जा मूलाधार चक्र से सहस्त्रार तक आसानी से उठ जाएगी। इसमें संसार से कुछ भी नहीं छूटेगा, लेकिन परमात्मा से जुड़ाव जरूर हो जाएगा।

सच्चा खजाना

एक बार ओशो (आचार्य रजनीश) के पास कॉलेज के कुछ शिक्षक पहुँचे। वे विश्वविद्यालय में ओशो का प्रवचन सुनकर प्रभावित हुए थे। उनमें से एक शिक्षक ने कहा, भगवन्, मैं वर्षों से प्रति दिन ध्यान करता हूँ। अपने इष्टदेव के रूप का चिंतन करता हूँ। किंतु, मुझे आंतरिक शांति नहीं मिलती। मैं समाज के हर वर्ग के लोगों से मिलता हूँ। लेकिन, देखता हूँ कि गरीब भौतिक सुख सुविधाएं न जुटा पाने के कारण तनाव में है, तो सेठ और अधिक धन–सम्पदा के फेर में रात को गहरी नींद नहीं ले पाता। ऐसे में क्या किया जाए?' ओशो ने कहा, 'तुम ध्यान करते समय बाहरी वस्तुओं का चिंतन करते हो। सच्ची शांति पाने के लिए कुछ पल अपने हृदय में झांको। सोचो कि क्या तुमने किसी को सुख–शांति देने के लिए 24 घंटे में से कुछ मिनट लगाए हैं? अपने अंदर झांकते ही तुम्हें स्वतः शांति मिलने लगेगी।' उन्होंने आगे कहा, 'तुम्हारा कथन है कि समृद्ध लोग यह नहीं जानना चाहते कि सुखमय जीवन कैसे जिया जाए। वे इस फिराक में लगे रहते हैं कि अपने धन से दूसरों को प्रभावित करके कैसे अपना दबदबा बनाया जाए। यदि वे अपनी समृद्धि से दूसरों की सुख–शांति व सुविधाएं देने का संकल्प ले लें, भौतिक खजाने की जगह असली आत्मिक खजाने की खोज करने लगें, तो वे कभी भी दुःखी नहीं रहेंगे।' शिक्षक की जिज्ञासा का समाधान हो गया।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी –कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक – प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र, चौबीसा
मार्गदर्शिका – कमला देवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक – सोहन लाल गाडरी
संपादक – लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी – घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमला देवी, मुद्रण स्थल–13,भोपा मगरी, बीएसएनएल एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3, उदयपुर (राज.) प्रकाशन स्थल–ई–डी–71 बापा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.) सम्पादक–लक्ष्मी लाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 मो.–09928022275,09785039524 www.mannkijeet.com E-mail : mankijeet2015@gmail.com